प्रस्तावना – राष्ट्रवाद की अवधारणा का सूत्रपात 18वीं शताब्दी में हुआ। कालांतर में इसके स्वरूप और चरित्र में परिवर्तन होते रहे है। राष्ट्र निर्माण की एतिहासिक प्रक्रिया देश और काल की सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति में भिन्न भिन्न समाजों में भिन्न रही है। 18वीं शताब्दी में राष्ट्रीयता शासक वर्ग की आकांक्षा और प्रयास की विषय थी। 19वीं शताब्दी की राष्ट्रीयता ने मध्यम वर्ग के अभ्युदय के साथ साथ बुर्जुआ आंदोलन का स्वरूप ग्रहण किया। 20वीं शताब्दी की अवधारणा के अनुसार, राष्ट्र के प्रत्येक सदस्य को समान अवसर और समान न्याय मिलना चाहिए,पर आधारित था।

भारत में राष्ट्रीय चेतना का प्रादुर्भाव अँग्रेजी शासन स्थापित होने के उपरांत शीघ्र ही हो गया था, परन्तु इसका आधार, चरित्र और विकास क्रम पश्चिमी देशों से भिन्न रहा है। प्रारम्भ में यह चेतना नगरीय शिक्षित वर्ग तक ही सीमित थी, परन्तु आर्थिक,सामाजिक परिवर्तन के साथ राष्ट्रीयता के नवीन सैद्धांतिक आधार आते गए और नवीन परिस्थितियो में यह चेतना अन्य वर्गो में भी उत्पन्न होने लगी। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक राष्ट्रीयता ने एक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर लिया और यह आन्दोलन स्वतन्त्रता आन्दोलन के समानान्तर चलने लगा। वस्तुतः स्वतन्त्रता आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन एक दूसरे के पूरक बन गए।

19वीं 20वीं शताब्दी में ब्रिटिश सरकार से भारत में सभी वर्गो में असंतोष बढ़ रहा था। जिसकी वजह से राष्ट्रीय चेतना का विकास तेजी से हो रहा था राष्ट्रीय नायक अपने अपने ढंग से राष्ट्र कि व्याख्या करने लगे थे। गरम दल के नेता पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग करने लगे थे। और आन्दोलन करके जनसामान्य को सम्मिलित करने के प्रयास करते थे। इस विचारधारा को महाराष्ट्र में विशेष प्रश्रय मिला। जहां शिवाजी और पेशवाओं द्वारा हिन्दू राज्य स्थापना के लिए संघर्षरत थे। इस भावना का लाभ उठाकर तिलक ने धर्म, इतिहास और राजनीति के नियोजित योग से राष्ट्रीयता के प्रसार से विभिन्न कार्यक्रम अपनाए तिलक ने समाज सुधार संबंधी विधेयक के विरुद्ध जनसभाए आयोजित करने और

समाचार पत्रो में लेख लिख कर जनता के प्रत्येक वर्ग से शासन के प्रति आक्रोश की भावना उत्पन्न कर दी जनता तिलक के इस तर्क से विशेष रूप से प्रभावित हुई कि विदेशी शासन धर्म और परंपरा पर आघात कर रहा है।

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास को देसाई ने पाँच चरणों में विभक्त करके प्रदर्शित किया है उनका मानना है की प्रथम चरण में भारतीय राष्ट्रवाद का सामाजिक आधार अत्यन्त सीमित था। ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित नयी शिक्षण संस्थाओ से आधुनिक शिक्षा प्राप्त बौद्धिक समूह, जिसने पश्चिमी संस्कृति का अध्ययन करके उसकी जनतांत्रिक एवं राष्ट्रिय विचार धारा को आत्मसात कर लिया था ,ने सर्वप्रथम भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना जागृत किया। दूसरे चरण की शुरुआत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के प्रादुर्भाव के साथ हुआ। इस अवधि में उदरवादी बौद्धिक समहों की वैचारिकी एवं रणनीति ने राष्ट्रीय आंदोलन एवं कार्यक्रम के स्वरूप को निर्धारित किया, जिसके माध्यम से भारत के नए बुर्जुआ समहों के हितो की अभिव्यक्ति हुई। राष्ट्रवाद के विकास में तीसरे चरण के अंतर्गत उग्रवादियों का नेतृत्व महत्वपूर्ण रूप से उभरा। चतुर्थ चरण की प्रमुख विशेषता यह थी कि इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आन्दोलन को व्यापक जन आधार मिला, जो प्रत्यक्ष जन कार्यवाइयों का हथियार बना। राष्ट्रीय भावना जो अब तक उच्च मध्यमवर्गीय समूहों तक सीमित था इस अवधि में जन-जन तक विस्तृत हो गया। भारतीय राष्ट्रवाद के पांचवे चरण में अनेक नए परिवर्तन हुए। जिसमें कांग्रेस का विभाजन हुआ। सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में फारवर्ड ब्लॉक का गठन हुआ। दलित वर्गो में राष्ट्रीय भावना का विकास जारी रहा। किसान आंदोलन का तीव्र विकास हुआ। जन समहों में जनतांत्रिक संघर्ष का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त भारतीयो में राष्ट्रीयता के प्रति चेतना विकसित हुई, जिसकी अभिव्यक्ति भाषायी आधार पर प्रान्तों के पुनर्गठन की मांग के रूप में हुआ.

रवीद्रनाथ टैगोर राष्ट्रवाद के विरुद्ध थे। राष्ट्रवाद के संदर्भ में टैगोर का मानना था की "राष्ट्रवाद भोगोलिक राक्षस है, जो एक निश्चित भू – भाग पर रहने वाले लोगो को अपना आहार बना लेगा। टैगोर को राष्ट्रवाद के आलोचक के रूप में जाना जाता है, क्योंकि वे कभी नहीं चाहते थे की मानवता के ऊपर राष्ट्रवाद को थोपा जाए। उसी समय काल में भारत के अन्य विचारक भी राष्ट्रवाद पर अपना विचार देते है। जिसमें महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू, डॉ॰भीम राव अम्बेडकर, जैसे विचारक समतावादी राष्ट्र की बात करते थे। दूसरी तरफ सावरकर "हिन्दू राष्ट्र" की बात करते थे। इसके साथ साथ राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, मालवीय जी, जैसे समाज सुधारक भी अपनी राष्ट्र संबंधी विचारों से भारत को प्रभावित कर रहे थे।

भारतीय राजनीति मे गांधी के प्रादुर्भाव से एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ गांधी जी ने 1917 के चंपारण में किसानों का सत्याग्रह सफलता पूर्वक संचालन करके राष्ट्रीय आंदोलन को सत्याग्रह का नया अस्त्र प्रदान किया। चंपारण कैरा और अहमदाबाद में किसानों मजदूरों के शोषण के प्रश्न पर गांधी ने न केवल इन वर्गों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा बल्कि यह भी स्थापित किया की शोषण के विरुद्ध संघर्ष राष्ट्रीय आंदोलन का अंग है। गांधी जी के नेतृत्व मे भारतीय राष्ट्रवाद रचनात्मक एवं सर्वांगीण राष्ट्रवाद बन गया। इनका लक्ष्य स्वराज्य एवं स्वदेशी की प्राप्ति था। गांधी जी के स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति नहीं था , बल्कि भारतीय राष्ट्र का सामाजिक आर्थिक और नैतिक उत्थान था। यह एक अहिंसक और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की कल्पना करते थे। गांधी जी संभवतः पहले व्यक्ति थे ,जिनहोने अहिंसा को स्वतन्त्रता आंदोलन के कार्यक्रम का आधार बनाया। गांधी के धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की प्रथम अभिव्यक्ति 1920 के असहयोग आंदोलन मे ही स्पष्ट रूप से हुई थी। गांधी जी का राष्ट्रवाद नैतिक राष्ट्रवाद था। गांधी जी ने राष्ट्रवाद के एक नवीन विचारधारा के साथ एक नया रूप प्रदान किया। जबकि सावरकर का राष्ट्रवाद हिन्दू राष्ट्रवाद के नाम से जाना जाता है। सावरकर उग्र राष्ट्रवादी तथा वीर क्रांतिकारी

थे। सावरकर हिन्दू राष्ट्र के सांस्कृतिक एकता को स्वीकार करते थे उनका मानना था की "यदि हिन्दुत्व मृत्योपरांत मोक्ष की समस्याओ में तथा ईश्वर और विश्व संबंधी धारणाओ में व्यस्त है तो उसे रहने दो किन्तु जहां तक भौतिक और ऐहिक जीवन का संबंध है हिन्दू समान्य संस्कृति ,सामान्य भाषा ,सामान्य धर्म के द्वारा परस्पर आबद्ध होने के कारण एक राष्ट्र है। 1923 मे प्रकाशित अपनी पुस्तक "हिन्दुत्व" में सावरकर हिन्दुत्व को परिभाषित करते हुये लिखते है हिन्दू वह है जो सिंधु नदी से समुन्द्र तक सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि मानते है।

गाँधी और सावरकर अलग अलग राष्ट्र सम्बन्धी विचारों का प्रतिनिधित्व करते थे। गाँधी के राष्ट्र में न्याय, समानता, धर्मनिरपेक्षता, सत्य, अहिंसा, जैसे शब्द विद्दमान है। जिसकी वजह से गाँधी को "राम राज्य" का पोषक कहा जाता है। जबकि सावरकर "हिन्दू राष्ट्र" की कल्पना करते थे, जिसे बाद में गोलवलकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीनदयाल उपाध्याय, जैसे मनीषियों ने

संबंध है हिन्दू समान्य संस्कृति ,सामान्य भाषा ,सामान्य धर्म के द्वारा परस्पर आबद्ध होने के कारण एक राष्ट्र है। 1923 मे प्रकाशित अपनी पुस्तक "हिन्दुत्व" में सावरकर हिन्दुत्व को परिभाषित करते हुये लिखते है हिन्दू वह है जो सिंधु नदी से समुन्द्र तक सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि मानते है।

गाँधी और सावरकर अलग अलग राष्ट्र सम्बन्धी विचारों का प्रतिनिधित्व करते थे। गाँधी के राष्ट्र में न्याय, समानता, धर्मनिरपेक्षता, सत्य, अहिंसा, जैसे शब्द विद्दमान है। जिसकी वजह से गाँधी को "राम राज्य" का पोषक कहा जाता है। जबकि सावरकर "हिन्दू राष्ट्र" की कल्पना करते थे, जिसे बाद में गोलवलकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीनदयाल उपाध्याय, जैसे मनीषियों ने और आर॰ एस॰एस॰ जैसे संगठनों ने आगे बढ़ाया।

साहित्य पुनरावलोकन

गांधी और सावरकर के राष्ट्र संबंधी वीचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित साहित्यों का पुनरावलोकन किया जाएगा। जिसमें किताब से प्राप्त सामाग्री, इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त जानकारी और पत्र पत्रिका का इस्तेमाल करते हुए, इस शोध को प्रामाणिक बनाने की कोशिश किया जाएगा।

हिन्द स्वराज (1909)

हिन्द स्वराज गांधी के विचारों का सर्वश्रेष्ठ दर्शन है। जिसे संवाद के माध्यम से गांधी जी अपने विचार को पुस्तक के रूप में परिणत करते है। गांधी का विचार आधुनिक राष्ट्रवादियों के विपरीत है,क्योंकि आधुनिक राष्ट्रवाद एक धर्म,एक भाषा,एक संस्कृति, जैसे शब्दों का प्रयोग करतेहै। जबकि गांधी के राष्ट्रवाद में सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, संस्कृति, भाषा, का समावेश है। जिसे हम समतावादी राष्ट्रवाद कह सकते है। हिन्द स्वराज में गांधी कहते है, एक राष्ट्र का अर्थ यह नहीं की हमारे बीच कोई मतभेद न हो, लेकिन हमें एक दूसरे के भाषा को सिखनी चाहिए। साथ ही साथ गांधी ये भी कहते है की हिंदुस्तान के भिन्न-भिन्न संस्कृतियो भाषाओं को कोई विदेशी तोड़ नहीं सकता यह सदैव एकता के सूत्र में बंधे रहेंगे। और इनके बीच भावनात्मक संचार होता रहेगा। जो समतावादी राष्ट्रवाद की प्रमुख विशेषता को दर्शाता है।

भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि (1946)

सी॰ आर॰ देसाई ने इस पुस्तक में लिखा है "व्यापक राष्ट्रियता के आधार पर समाज, राज्य और संस्कृति के उदय के पूर्व संसार के विभिन्न भागों का जीवन मोटे तौर पर कबीलों की जिंदगी, दास प्रथा और सामंतवाद की स्थिति से गुजरा सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक

विकास के खास दौर में राष्ट्रों का जन्म हुआ" देसाई इस पुस्तक में भारत के एतिहासिक पृष्टभूमि पर प्रकाश डालते है ।जो हमारे शोध के एतिहासिक परिप्रेक्ष्य को मार्गदर्शित एवं समझ बढ़ाने के लिए उपयोगी होगा। चूंकि इस पुस्तक में विरोधाभाष है क्योंकि देसाई इस पुस्तक के अन्य भागों में कहते है, भारत की सामाजिक और राष्ट्रिय भावनाए भारतीय लोगो में पहले से ही विद्धमान थी। लेकिन फिर भी देसाई की यह पुस्तक हमारे शोध के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

द नेशन एंड इट्स फ्रेगमेंट

पार्था चटर्जी के द्वारा लिखी गई यह पुस्तक राष्ट्रवाद के संदर्भ में लिखा गया "गीता" है। इस पुस्तक में चटर्जी का मानना है यहा के लोग स्वयंको एक समुदाय के रूप में कल्पना नहीं कर सकते हैं,राष्ट्रवाद को आंतरिक डोमेन और बाहरी डोमेन के रूप में समझना चाहिए आंतरिक डोमेन का अर्थ आध्यात्मिक है जबकि बाहरी डोमेन का अर्थ भौतिकतावादी से संबन्धित है। अर्थात कुछ समुदाय आध्यात्मिक वजह से एक दुसरे से जुड़े होते है। जबकि दूसरा समुदाय भौतिक कारणो की वजह से एक दूसरे से जुड़े होते है। गांधी और सावरकर के राष्ट्र संबंधी विचारों के संदर्भ में यह पुस्तक हमारे शोध कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

हिन्दुत्व (1923)

विनायक दामोदरसावरकर हिंदुत्व में लिखते है समग्र हिन्दू जाति एक है हिन्दू जाति का रक्त एक है इसलिए हमे स्वय को पहचानना होगा इस संदर्भ में वो कहते है। हिन्दू वह है, जो सिन्धु से समुंद्र तक सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपनी पित्रभूमि मानते हैं सावरकर कट्टर हिंन्दूवादी

क्रांतिकारी थे, जो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए मिथक प्रयास कर रहे थे। मिथक प्रयास इसलिए क्योंकि भारत भूमि पर केवल हिन्दू धर्म को ही मनाने वाले नहीं थे। और ना है, भारत में शुरू से ही भिन्न-भिन्न धर्म, जाति,भाषा, आदि मौजूद है। ब्रिटिश शासन में घूमने आए स्ट्रेची अपनी पुस्तक "इण्डिया" में लिखते हैं। "भारत में पंजाब और बंगाल में जितनी भिन्नता है उतना तो दो देशों मेंनही होगी" लेकिन सावरकर एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति की बात करने की वजह से आधुनिक राष्ट्रवादी विचारको में अपना स्थान रखते है।

लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र

राम पुनियानी द्वारा लिखी गई यह पुस्तक हमारे शोध के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में पुनियानी कहते है भारत में अगर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है तो हिन्दू राष्ट्र नहीं हो सकता, दूसरे भाषा में कहे तो हिन्दू राष्ट्र को लोकतन्त्र के अनुरूप कार्य करने वाली संस्था नही मानते हैं। पुनियानी उन वीचारको का समर्थन भी करते है जिसने हिन्दू आंदोलन को फासीवादी वीचारको से जोड़ कर देखा है। लेखक इस पुस्तक में यह दिखाने का प्रयास कर रहे है कि किस प्रकार हिन्दू राष्ट्र की कल्पना करने वाले फासीवादी वीचारको के समीप हैं। जो खुद को श्रेष्ठ समझते है, और दूसरों पर शासन करने की नियत रखते है। आजादी के बाद भारत ने लोकतन्त्र को अपनाया जो सभी समुदाय, धर्म, जाती, को एक व्यवस्था के अनुरूप व्यवहार करने पर बल देती है।

मेरे सपनों का भारत

इस पुस्तक में गांधी जी अपने स्वभाव के अनुरूप भारत का निर्माण करना चाहते है। जिसमें गांधी लिखते है मैं भारत को स्वतंत्र और बलवान देखना चाहता हूँ। क्योंकि मै चाहता हूँ

की वह दुनिया के भले के लिए स्वेच्छापूर्ण अपनी पवित्र विचार दे सके, गांधी एक शोषण विहीन राष्ट्र चाहते थे, जो न्यायप्रिय और राम राज्य के अनुरूप हो। गांधी का राष्ट्र सद्गुण प्रधान राष्ट्र हैं। चूकि भारत का राजनीतिक दर्शन भी पंचशील के सिद्धांतों पर विश्वास रखता है नेहरू ने चाइना के साथ इस समझौते को व्यवहार के रूप में प्रयोग किया था, लेकिन चीन ने भारतीय दर्शन को आईना दिखाने का प्रयास किया। जिसकी वजह से 1962 में दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ।भारतीय दर्शन को अगर वैश्विक पटल पर रख कर अगर देखा जाय तो गांधी के द्वारा दिया गया विचार, स्थायी एवं अहिंसात्मक विश्व के निर्माण में सहायक होगा

वी ऑर आवर नेशनहुड ड़ीफ़ाइन

सावरकर के द्वारा 1923 में लिखी गई पुस्तक "हिदुत्व"से प्रभावित होकर गोलवलकर ने 1939 में वी ऑर आवर नेशनहुड डीफाइन पुस्तक लिखी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे संघचालक माधवराव सदाशिवराज गोलवलकर की सबसे अहम विश्लेषण को सामने लाती यह कृति न केवल संघ द्वारा की गई राष्ट्र और समाज की कल्पना का सटीक अनुमान उपलब्ध कराती है, बल्कि हाल ही में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार और संघ द्वारा उठाए गए कई उल्लेखनीय कदमों को समझने के लिए एक एतिहासिकऔर वैचारिक संदर्भ भी उपलब्ध कराती है। संघीय लोग किसी विषय पर क्या और कैसे सोचते हैं और उनकी प्रक्रियाओं और साधनों सहित लक्ष्य को परिभाषित करने का मनोविज्ञान क्या है इस छोटी सी किताब के जरिये समझा जा सकता है।

प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता

प्रस्तुत पुस्तक "प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता" को वैज्ञानिक विकास के परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित-विश्लेषित करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास है। उत्पादन के साधनों में परिवर्तन किस प्रकार हमारे सांस्कृतिक विकास को प्रभावित करता है, इसका सुसंगत विवेचन इस पुस्तक में किया गया है। इतिहास के कुछ जटिल प्रश्नों को समझने-समझाने का प्रयास भी यहाँ दिखाई पड़ता है। उन अनेक प्रश्नों में कुछ प्रश्न हैं : क्या अन्न-संकलन और पशु-चारण की अवस्था से गुजरते हुए कृषि-युग तक आकर नए धर्म की आवश्यकता अनुभव की गई थी? सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान विकसित नगरों का विनाश कैसे हुआ? क्या आर्य नाम की कोई जाति थी और अगर थी तो वे कौन लोग थे? क्या किसी काल में वर्ण-व्यवस्था की भारतीय समाज में कोई सार्थक भूमिका थी? लन्दन के 'टाइम्स लिटरेरी सप्लीमेंट' ने इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए इसे 'ज्वलन्त रूप से मौलिक कार्य' तथा 'भारत का पहला सांस्कृतिक इतिहास' बताया था। इस पुस्तक के रूप में प्रो. कोसंबी ने भारत के प्राचीन इतिहास को न केवल प्रेरक बल्कि सुबोध भी बना दिया है।जो हमारे शोध के लिए सहायक होगा।

राष्ट्रवाद

'राष्ट्रवाद' में उन व्याख्यानों को संकलित किया गया है, जिन्हें रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी जापान तथा अमेरिका यात्रा के दौरान भाषण दिया था। वर्ष 1916-17 में दिए गए व्याख्यान न केवल दूरदर्शितापूर्ण थे बल्कि भविष्यसूचक भी थे और इस बात का सबूत दो-दो विश्वयुद्धों, आणविक शास्त्रों की होड़, पर्यावरण का विनाश तथा नियंत्रण से मुक्त प्रौद्योगिकी में देखने को मिला। ये व्याख्यान पश्चिमी 'राष्ट्र' के आक्रामक भौतिकवाद की धारणा के विपरीत थे। एक ओर जापानी श्रोताओं ने इन खरी बातों को पसन्द नहीं किया तो दूसरी

ओर अमेरिकी श्रोताओं ने भी उनके उग्र भाषणों के प्रति अपना विरोध प्रकट किया। टैगोर का मानना था कि भारत की महत्ता मानवीय मूल्यों को स्वीकृति तथा सामाजिक सभ्यता का संदेश देने में है। 'प्रति-राजनीति' के संस्थापक टैगोर की दूरदर्शिता अंतश्चेतना को अपना कर हम आज भी अपने समय की बहुत-सी समस्याओं को सुलझा सकते हैं।

शोध का उद्धेश्य

1- गांधी और सावरकर के राष्ट्र संबंधी वीचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2- गांधी और सावरकर के राष्ट्र संबंधीवीचारों को स्पष्ट करते हुए व्याख्या करना।

3- 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारत में अन्य राष्ट्रवादी तत्वों की जांच करना।

4- वर्तमान समय में राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता को उजागर करना।

5- लोकतंत्र में राष्ट्रवाद की क्या भूमिका है, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को राष्ट्रवाद कैसे प्रभावित करती है। जांच करना।

6- भारत और यूरोप में राष्ट्रवाद के इतिहास की व्यखाया करना।

प्राक्कल्पना

गांधी और सावरकर एक समय के विचारक होते हुए भी भिन्न-भिन्न वीचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते थे। गांधी के राष्ट्र संबंधी विचार लोकतन्त्र के अनुरूप थे। जबकि सावरकर एकाधिकारवादी राष्ट्रवाद का परतिनिधित्व कर रहे थे, जो एक भाषा एक संस्कृति एक धर्म में विश्वास रखते थे.

शोध प्रविधि

शोध के लिए व्याख्यात्मक विधि,तुलनात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि और एतिहासिक विधि का भी प्रयोग किया जाएगा।

संदर्भ सूची

1- शर्मा एच.सी.शर्मा,(2007),राष्ट्रवाद और राष्ट्रनिर्माण सिद्धांत एवं प्रक्रिया,ओमेगा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली-110 002

2- पुनियानी,राम,(2004),लोकतांत्रिक भारत या हिन्दू राष्ट्र, वाणी प्रकाशन 21-A दरियागंज, नई दिल्ली

3- पुरोहित, बी आर,(1965), हिन्दू रेविवालिस्म एंड नेशनलिस्म,साही प्रकाशन,सागर

4- वर्मा,विश्वनाथ प्रसाद,(2009), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, अनुपमप्लाजा,ब्लॉक न॰ 50, संजय प्लेस आगरा

5- गांधी,महात्मा,(2014), मेरे सपनों का भारत, राजपाल प्रकाशन

6- मेनन,सुजाता,(2000),हिन्दू नेशनलिस्म, इकनॉमिक एंड पोलिटिकली विकली

7- त्रिपाठी, सत्येन्द्र और दिवेदी,कृष्णदत्त.(19090),भारतीय राष्ट्रवाद स्वरूप और विकास, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

8- सिंह, श्रीकांत,(2016), मिडिया विमर्श, रोहित नगर फेज -1 भोपाल, मध्यप्रदेश

9- गांधी, महात्मा,(1995), हिन्दू धर्म क्या है, नेशनल बूक ट्रस्ट, इंडिया

10-गांधी,महात्मा,(2014), सत्य का प्रयोग, नवजीवन ट्रस्ट

11- चन्द्र,बिपन,(2009),भारत का राष्ट्रिय आंदोलन, अनामिका पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स(प्रा॰) लि॰, दरियागंज, नई दिल्ली

12- मुरारी,मयंक,(2015),भारत एक सनातन राष्ट्र,प्रकाशन संस्थान, दरियागंज,नई दिल्ली

13- गांधी,महात्मा,(1909),हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद-380014

14- सावरकर,विनायक दामोदर,(1923),हिन्दुत्व,पमहर्टस्ट्रीट कलकत्ता

15- नेहरू जवाहर,(2016), सस्ता साहित्य मंडल एन 77 पहली मंजिल कणाद सर्कस नई दिल्ली

16- भार्गव,राजीव(2011), राजनीतिक सिद्धांत, पियर्सन पब्लिकेशन

17- गाँधी, महात्मा (1946), रचनात्मक कार्यक्रम, नवजीवन ट्रष्ट,अहमदाबाद-380014

18- चंद्र,बिपन(2009),भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स(प्रा.)ली. 21ए,अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002